विश्वास और चंगाई

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

I. बीमारी के कारण

II. यीशु की चंगाई की सेवा जैसा मत्ती द्वारा अंकित है।

III. वैद्य लूका का अवलोकन

IV. विश्वास की परिभाषा

V. विश्वास का महत्व

VI. लाज़र की बीमारी से सीख

VII. विश्वास के वीर

VIII. विश्वास की परीक्षा

विश्वास और चंगाई

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

I. बीमारी के कारण :

1. **स्वाभाविक कारण** : हम पतित संसार में रहते हैं, जहां हानिकारक किटाणु और वायरस रहते हैं। परमेश्वर ने हमें प्रतिरक्षक शक्ति दी है जिसके द्वारा हम स्वाभाविक रुप से इनका सामना कर सकते हैं। हमारी यह प्रतिरोधक शक्ति क्षीण पड़ कर बीमारियों को आने की अनुमति दे सकती है। परमेश्वर ने हमें अपनी दया और भलाई में दवाईयां और टीके आदि भी दिए हैं। सफ़ाई और स्वास्थ्य का समान्य ज्ञान भी इसमें सहायता करता है।

व्यक्तिगत रीति से, जब मैं ऐसी स्थिति में होता हूं जहां छूत की बीमारी फैली है या जहां भोजन और पानी की सफ़ाई पर कोई नियंत्रण नहीं है, मैं परमेश्वर के वचन में विश्वास रखता हूं और घोषणा करता हूं : ''यदि वे प्राणनाशक विष भी पी जाएं तो इससे उनकी कोई हानि न होगी'' (मरकुस 16:18)। मिशन के स्थान पर हम प्रार्थना करते हैं, ''इस भोजन या जल में किसी हानिकारक जीवाणु को मैं कहता हूं, यीशु मसीह के नाम से ,मर जा। और चौदह वर्षों से हम अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द उठा रहे हैं।

2. **पाप शैतान को हमारे ऊपर आक्रमण करने देने के वैधिक अधिकार का द्वार खोल देता है।**
लूका 13:10–13वह सब्त के दिन एक आराधनालय में उपदेश दे रहा था।(11) देखो, वहां एक स्त्री थी जिसको अठारह वर्ष से एक दुष्टात्मा ने रोग–ग्रस्त कर रखा था; उसकी कमर मुड़ कर दुहर गई थी और वह किसी प्रकार सीधी नहीं हो सकती थी।(12) जब यीशु ने उसे देखा तो अपने पास बुला कर उससे कहा, ''हे नारी, तू अपने रोग से मुक्त हो गई है।''(13) तब उसने उस पर हाथ रखा; वह तुरन्त ही सीधी हो गई और परमेश्वर की महिमा करने लगी।

- यह स्पष्ट रुप से बताता है कि कुछ कष्टों का कारण दुष्ट आत्माएं भी हो सकती हैं।
- ध्यान दें, यीशु ने दुष्ट आत्मा को निकाला नहीं परन्तु घोषण की कि वह मुक्त हो गई है।

यूहन्ना 5:14 बैतहसदा में चंगाई : इसके पश्चात यीशु ने उसे मन्दिर में पा कर उससे कहा, ''देख, तू स्वस्थ हो गया है, फिर कभी पाप न करना, ऐसा न हो कि इससे भी कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।''

- यह मनुष्य 38 वर्ष से रोगी था।
- इस बात पर बल दिया है कि पाप के कारण कितना बुरा हो सकता है।

रोमियों 1:24 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें उनके मन की वासनाओं की अशुद्धता के लिए छोड़ दिया, कि उनके शरीरों का आपस में अनादर हो ... (27) निर्लज्ज कार्य कर के अपने ही में भ्रष्टाचार का उचित दण्ड पाया।

- शायद इस का ज़िक्र एड्स या दूसरे यौन द्वारा ग्रसित बीमारियों से है।

नीतिवचन 3:7–8 यहोवा का भय मानना, और बुराई से विमुख रहना। इससे तेरा शरीर स्वस्थ रहेगा तथा तेरी हड्डियों को पुष्टता प्राप्त होगी।

3. अस्वस्थ जीवन शैली

गलातियों 6:7–8 धोखा न खाओ : परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे।(8) क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; परन्तु जो पवित्र आत्मा के लिए बोता है, वह पवित्र आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

- बहुत कम व्यायाम और अस्वस्थ भोजन करना : बहुत ज़्यादा वसा, शक्कर, चिकनाईयुक्त आदि वाला भोजन, नसों में रुकावट, उच्च रक्तचाप, हृदय सम्बन्धित समस्याएं इत्यादि।

- घर में और आस–पास किटाणु नाशक दवाईयों, विषैले रसायनों का इस्तेमाल, और जिसका बड़ा भाग अन्न उत्पादन में प्रयोग किया जाता है जो नदियों, कूओं और घरों के पानी में मिल जाता है। इन विषैले रसायनों से नाड़ियां, कोशिकाएं, हमारा DNA जो हमारे बच्चों में आता है, क्षतिग्रस्त हो जाता है।

4. अक्षमाशीलता, घृणा, क्रोध, कुढ़ना

इब्रानियों 12:15 ध्यान रखो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूट कर कष्ट का कारण न बने, जिससे कि बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएं।

मत्ती18:32–35 तब उसके स्वामी ने उसे बुला कर कहा, '' हे दुष्ट दास! इसलिए कि तू ने मुझ से विनती की, मैंने तेरा सारा ऋण क्षमा कर दिया था। (33) तो फिर मैंने जिस प्रकार तुझ पर दया की, क्या उसी प्रकार तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?'' और उसके स्वामी ने क्रोध से भर कर उसे यातना देने वालों को सौंप दिया कि ऋण चुकाने तक उन्हीं के हाथों में रहे। (35) इसी प्रकार यदि तुम में से प्रत्येक अपने भाई को हृदय से क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे साथ वैसा ही करेगा।

5. प्रभु भोज का निरादर

1 कुरिन्थियों 11:27–32 इसलिए जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खाता और प्रभु के इस कटोरे में से पीता है, वह प्रभु की देह और लहू का दोषी ठहरेगा। (28) अतः मनुष्य अपने आप को परखे तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे में से पीए।(29) क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहचाने बिना खाता पीता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है।(30) इसी कारण तुम में से बहुत – से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।(31) यदि हम अपने आप को ठीक से जांचते तो दण्ड न पाते।(32) परन्तु प्रभु दण्ड दे कर हमारी ताड़ना करता है कि हम संसार के साथ दोषी न ठहराए जाएं।

II. यीशु की चंगाई की सेवा जैसा मत्ती द्वारा अंकित है।

मत्ती 6:30 इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुमको वह इनसे बढ़कर क्यों न पहिनाएगा?

- हम अच्छे वस्त्र पहिनते हैं। हम सब के पास "अल्प विश्वास" हैं।

मत्ती 8:2–4 और देखो, एक कोढ़ी उसके पास आया और दण्डवत करके उससे कहने लगा, "हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।"

- यहां बड़ा प्रशन है : "यदि यीशु चाहे?"
- और यहां इसका उत्तर है :

(3) यीशु ने हाथ बढ़ा कर उसे छूआ और कहा, "मैं चाहता हूं। तू शुद्ध हो जा।" और वह कोढ़ से तुरन्त शुद्ध हो गया।

पूरे पवित्र शास्त्र में यह प्रकट है कि वह "चाहता" है ।
निर्गमन 12:13 जिन घरों में तुम रहते हो उन पर वह लहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा, और मैं उस लहू को देख कर तुम्हें छोड़ता जाऊंगा, और जब मैं मिस्र देश को मारुंगा तो वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और न ही तुम नाश होगे।

निर्गमन 12:23 क्योंकि यहोवा मिस्रियों को मारने के लिए निकलेगा और जहां जहां वे दरवाज़े की चौखट के ऊपर और दोनो अलंगों पर लहू लगा हुआ देखेगा वहां वहां यहोवा उस घर को छोड़ कर आगे निकल जाएगा और नाश करने वाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिए न जाने देगा।

भजन संहिता 91:10–11 न कोई विपत्ति तुझ पर आएगी, न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आने पाएगा। (11) क्योकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा, कि वे तेरे सब मार्गों में तेरी रक्षा करे।

मत्ती 9:35–38 यीशु सब नगरों और गांवों में जाकर, उनके आराधनालयों में उपदेश देता और राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता और सब प्रकार के रोग तथा हर प्रकार की दुर्बलता को चंगा करता रहा।(36) और जन समुह को देख कर उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की तरह पीड़ित और उदास थे जिनका कोई चरवाहा न हो। (37) तब उसने अपने चेलों से कहा, "पक्की फसल तो बहुत है, परन्तु मज़दूर थोड़े हैं। (38) इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह फसल काटने के लिए मज़दूर भेज दे।"

- ऐसा लगता है कि समस्या **पर्याप्त सेवक नहीं** होने की है, जिनके पास 'अल्प विश्वास' से कुछ ज़्यादा है।
- हमें चाहिए कि हम बार–बार **अधिक विश्वास** की मांग करें और पुकारें, जैसा अगले पद में हम पिता को पातें हैं:

मरकुस 9:23–24 यीशु ने उस से कहा, ''क्या? 'यदि तू कर सकता है!' विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ सम्भव है।'' (24) बालक के पिता ने तुरन्त चिल्ला कर कहा, ''मैं विश्वास करता हूं, मेरे अविश्वास का उपचार कर।''

- अकसर मैं इस लड़के के पिता के समान होता हूं।

मत्ती 8:8–10 परन्तु सूबेदार ने उत्तर दिया, '' हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले आए, परन्तु केवल वचन कह दे और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। (9) क्योकि मैं भी शासन के आधीन हूं और मेरे आधीन सिपाही हैं। जब मैं एक से कहता हूं,' जा!' तो वह जाता है ... (10) जब यीशु ने यह सुना तो अचम्भा किया और अपने पीछे आने वालों से कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूं, मैंने इस्राएल के किसी व्यक्ति में भी ऐसा बड़ा विश्वास नहीं पाया ... (13) और यीशु ने सूबेदार से कहा, '' जा, तेरे विश्वास के अनुसार ही तेरे लिए हो।'' और उसका सेवक उसी क्षण चंगा हो गया।

- सूबेदार पहिले यीशु के पास गया – हमें भी – और यीशु से वचन बोलने को कहा। हालांकि, यीशु अब इस संसार में नहीं है कि अपने मुख से वचन कहे।

- हम उसके राजदूत है (2 कुरिन्थियों 5:20) ताकि हम उसके वचनों को यहां इस पृथ्वी पर बोलें। परमेश्वर ने हमें उसका वचन बोलने का अधिकार दिया है।

मत्ती 28:18–19 ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया है। **इसलिए जाओ** उसके पास अधिकार है, उसने हमें जाने को कहा, हम उसके नाम से जाते हैं।

मरकुस 16:17–18 और विश्वास करने वालों में यह चिन्ह दिखाई देगेः मेरे नाम से (उसके अधिकार से) वे दुष्ट आत्माओं को निकालेंगे, तथा नई नई भाषाएं बोलेंगे; (18) वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राण नाशक विष भी पी जाएं तो इससे उनकी हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।

मत्ती 16:19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा।

- क्रम पर ध्यान दें, यह स्वर्ग से आरम्भ होता है परन्तु हमारे पास ''कुंजियां'' हैं कि हम उसे इस पृथ्वी पर ले आएं।

मत्ती 8:26 उसने उनसे कहा, '' हे अल्प विश्वासियों तुम इतने भयभीत क्यों हो?'' तब उठ कर उसने आंधी और समुद्र को डांटा, और पूर्णतः शान्ति छा गई।

- जब 'जीवन की आंधियां ' डराती हैं, तब विश्वास में बोला गया वचन शान्ति, सुरक्षा और 'दीर्घायु' ला सकता है। (भजन संहिता 34:12)

इफिसियों 6:16–17 इनके अतिरिक्त, विश्वास की ढाल लिए रहो जिससे तुम उस दुष्ट के समस्त अग्नि–बाणों को बुझा सको।(17) और उद्धार का टोप तथा आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।(और परमेश्वर का वचन हम तक कैसे पहुंचा?) (18) प्रत्येक विनती और निवेदन सहित पवित्र आत्मा में निरन्तर प्रार्थना करते रहो और यह ध्यान रखते हुए सर्तक रहो कि यत्न सहित सब पवित्र लोगों के लिए लगातार प्रार्थना करो।

[डिया(युनानी) ; एक पूर्वसर्ग जो किसी क्रिया के माध्यम को अंकित करता है।]

मत्ती 9:2 और देखो, कुछ लोग एक लकवे के मारे हुए को खाट पर लिटा कर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देख कर उस लकवे के रोगी से कहा, "मेरे पुत्र, साहस रख, तेरे पाप क्षमा हुए।"(5)सहज क्या है? यह कहना, 'तेरे पाप क्षमा हुए', या यह , 'उठ और चल फिर'?(6) परन्तु इसलिए कि तुम जान जाओ कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है" – तब उसने लकवे के रोगी से कहा – "उठ, अपनी खाट उठा और घर जा।" (7) वह उठ कर अपने घर चला गया।

- यह विश्वासयोग्य मित्रों का विश्वास हो सकता है जिन्होंने 'नहीं ' जवाब नहीं दिया, परन्तु वो सब कुछ किया जिससे उस पीड़ित को यीशु के पास लाया जाए।

मत्ती 9:20–22 और देखो, एक स्त्री ने जो बारह वर्ष से लहू बहने के रोग से पीड़ित थी, उसके पीछे आकर उसके चोगे का किनारा स्पर्श किया; (21) क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, "यदि मैं उसके वस्त्र को ही स्पर्श कर लूं तो चंगी हो जाऊंगी।" (22) यीशु ने मुड़ कर उसे देखा और कहा, "पुत्री, साहस रख, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।

- समस्त रुकावटों को धकेलते , बिना हिम्मत हारे , प्रतिफल प्राप्त होता है।
- "यदि ..." जब हमारा विश्वास दृढ़ होता है और हम उसे छू लेते हैं, तो सम्पर्क जुड़ जाता है और उसकी महिमा की सामर्थ, उसकी परिपूर्णता, हमारे अन्दर बह जाती है।

मत्ती 9:27–30 जब यीशु वहां से आगे बढ़ा तो दो अंधे उसके पीछे यह चिल्लाते और पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!"(यीशु ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु वे बिना देखे उसके पीछे चलते रहे) (28) और जब वह घर में प्रवेश कर चुका (बन्द दरवाज़ा भी उन्हें पीछा करने से रोक नहीं पाया) तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, " क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हूं ?" उन्होंने उससे कहा, "हां, प्रभु।"(29) तब उसने यह कहते हुए उनकी आंखों को स्पर्श किया, "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो जाए।"(30) और उनकी आंखें खुल गईं।

मत्ती 7:7–8 "मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।(8) क्योंकि प्रत्येक जो मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूंढता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।

जब पतरस पानी पर चला तो हमारे लिए उसने 'बड़ा विश्वास' प्रदर्शित किया, फिर भी यीशु ने कहा कि उसका 'अल्प विश्वास' है।

मत्ती 14:31 यीशु ने तुरन्त अपना हाथ बढ़ा कर उसे थाम लिया और उससे कहा, ''हे अल्प विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया?''

- यीशु कह रहे हैं, जब हमारे विश्वास में ''सन्देह'' मिल जाता है तब विश्वास ''अल्प'' होता है।

1. पतरस का हृदय और प्रार्थना वो है जो प्रभु की चाह और इच्छा हम सब के लिए है। ''प्रभु, मैं तेरे साथ रहना चाहता हूं, जहां तू रहे।'' यीशु इस प्रार्थना का उत्तर हमेशा, ''आ जा!'' के साथ देता है।

2. पतरस ने असम्भव को कर दिया, वह पानी पर चला, 'बड़े' विश्वास के कारण।

3. तेज़ हवा को देख कर , भय और सन्देह के साथ उसने अपनी आंखें यीशु पर से हटा दी। हमें अपनी आंखें यीशु पर लगाए रखनी है, जो विश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करने वाला है। इब्रानियों 12:2

4. जब वह लहरों में डूबने लगा, तब उसने यीशु की ओर देखा और उससे प्रार्थना की : ''हे प्रभु, मुझे बचा!'' एक और प्रार्थना जो उसकी इच्छा के अनुसार है।
   - इसमें हम ''अल्प विश्वास'' की सफलता और विफलता देखते हैं।
   - हमें एसे विश्वास की आवश्यकता है जो उन जीवन की आंधियों से बड़ा हो जो हमें पराजित कर सकती है।

आपका विश्वास इस प्रकार बढ़ सकता है :

(1) प्रार्थना और उपवास के द्वारा : जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं है, (पद 8) और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा।

(2) अपनी आत्मा को परमेश्वर का वचन पढ़ने, अध्ययन करने, मनन् कंठस्थ करने के द्वारा पोषण दें : विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। रोमियों 10:17

मत्ती 15:27–28 इस पर स्त्री ने कहा, ''हां प्रभु, पर कुत्ते भी तो स्वामी की मेज़ से गिरा हुआ चूर – चार खाते हैं।''(28) तब यीशु ने कहा, ''हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है। जैसा तू चाहती है, वैसा ही तेरे लिए हो।'' उसकी बेटी तत्काल ही चंगी हो गई।

- विश्वास ''नहीं'' का उत्तर नहीं लेता।

मत्ती 16:8 यह जान कर, यीशु ने उनसे कहा, ''हे अल्प विश्वासियों, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटियां नहीं हैं?

- हमारे पास जो नहीं है इस से विश्वास सीमित नहीं होता

मत्ती 17:20 उसने उनसे कहा, "अपने विश्वास की कमी के कारण, क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम में राई के दाने के बराबर भी विश्वास हो तो इस पहाड़ से कहोगे, 'यहां से हट कर वहां जा,' और वह हट जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव न होगा।

- वह कह रहा है – इसके लिए बहुत सारा विश्वास नहीं चाहिए।

मत्ती 21:21–22 यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ के साथ किया गया, परन्तु यदि इस पर्वत से भी कहो, 'उखड़ जा और समुद्र में जा पड़,' तो यह हो जाएगा।(22) और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह तुम्हे मिलेगा।"

III. वैद्य लूका का अवलोकन

लूका 4:40–41 सूरज डूबते समय, जिन–जिन के यहां लोग नाना प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए, और उसने एक एक पर हाथ रख कर उन्हें चंगा किया। (41) और दुष्टात्माएं भी चिल्लाती और यह कहती हुई कि "तू परमेश्वर का पुत्र है," बहुतों में से निकल गई।

लूका 6:17–19 और इसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहुदिया, यरुशलेम, और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुत लोग (18) जो उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिए उसके पास आए थे, वहां थे। और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किए जाते थे। (19) सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ निकलकर सब को चंगा करती थी।

- प्रचार (और/या शिक्षा) और चंगाई दोनो अकसर साथ–साथ होते हैं।

- चंगाई उसके अधिकार को प्रदर्शित करती है तथा उसकी शिक्षाओं को प्रशंसनीय बनाती है।

- अशुद्ध आत्माओं का सम्बन्ध अकसर स्वास्थ्य समस्याओं के साथ होता है।

लूका 9:1–2 फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया, (2) और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा। (6) अतः वे निकल कर गांव–गांव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे।

- उसके शिष्यों को अधिकार और सामर्थ दिया गया ताकि वे उसी सेविकाई को ज़ारी रख सकें – राज्य का प्रचार और चंगाई।

लूका 9:10–11 जब प्रेरित लौट आए तो सब कुछ जो उन्हों ने किया था उसे बताया। तब वह उनको अपने साथ ले कर चुप–चाप बैतसैदा नामक नगर को गया। (11) परन्तु भीड़ के लोगों को पता लग गया अतः वे उसके पीछे चल पड़े। उनका स्वागत करके वह उनसे परमेश्वर के राज्य की बातें करने लगा, और जिनको चंगा होने की आवश्यकता थी उसने उन्हें चंगा किया।

- वही नमूना – राज्य की शिक्षा और चंगाई। इस बात को प्रदर्शित करना कि राज्य में कोई बीमारी नहीं है।

प्रेरितों के काम 5:13–16 प्रेरितों के द्वारा लागों के मध्य बहुत से चिन्ह और अद्‌भुत कार्य हो रहे थे ... (14) प्रभु पर विश्वास करने वाले पुरुषों और स्त्रियों की भीड़ की भीड़ उनमें निरन्तर मिलती जा रही थी ; (15) यहां तक कि लोग बीमारों को भी सड़कों पर ला–ला कर चारपाइयों और बिछौनों पर लिटा दिया करते थे कि जब पतरस उधर से निकले तो कम से कम उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए। (16) यरुशलेम के आस–पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों तथा दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लाया करते थे और वे सब बीमार चंगे हो जाते थे।

- पवित्र आत्मा का पहली बार उण्डेले जाने के पश्चात, चिन्हों और आश्चर्यकार्मो के द्वारा इस बात की पुष्टि हुई कि यह लोग (यीशु मसीह के चेले) और उनका सन्देश, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की ओर से हैं।

पतरस की सेविकाई :

प्रेरितों के काम 3:2–10 और लोग एक मनुष्य को जो जन्म से लंगड़ा था ले जा रहे थे, ... (4) तब पतरस ने यूहन्ना के साथ उसे एक टक देख कर कहा, "हमारी ओर देख!" (5) वह कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ध्यान से देखने लगा। (6) तब पतरस ने कहा, " मेरे पास चांदी और सोना तो है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है वह तुझे देता हूं – यीशु मसीह नासरी के नाम से चल – फिर !" (7) फिर उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसे उठाया, और तुरन्त उसके पैरों और टखनो में शक्ति आ गई। (8) वह उछल कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा। और चलते–उछलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके साथ मन्दिर में प्रवेश किया।(9) सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए देख कर,

- यह लंगड़े व्यक्ति का विश्वास नहीं था।

- प्रत्यक्ष रुप से पतरस को इसके परिणाम के बारे में अनिश्चयता नहीं थी। यह प्रकट करता है कि ''विश्वास बिना कार्यों के मरा हुआ है''।

प्रेरितों के काम 9:36–42 याफा में तबीता अर्थात दोरकास नामक एक शिष्या रहती थी ... (37) उन दिना ऐसा हुआ कि **वह बीमार हो कर मर गई,** और उन्हों ने उसे नहला कर अटारी के कमरे में रख दिया। (38) इसलिए कि लुद्दा, याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि **पतरस** वहां है, दो मनुष्यों को उसके पास यह विनती करने भेजा, "हमारे पास आने में देर न कर।" (39) पतरस उठ कर उनके साथ चल दिया। जब वह पहुंचा तो वे उसे अटारी पर ले गए। सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं ... (40) तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर प्रार्थना की, और शव की ओर मुड़ कर कहा, '' **तबीता, उठ**!'' उसने अपनी **आंखें खोल दी**, और पतरस को देख कर वह **उठ बैठी**। (41) उसने अपना हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुला कर उसे जीवित सौंप दिया। (42) **यह बात पूरे याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।**

- चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा बहुत से लागों के विश्वास में लाए जाने की पुष्टि होती है।

फिलिप्पुस की सेविकाई

प्रेरितों के काम 8:4–8 अतः जो तितर–बितर हुए थे, घूम घूम कर **वचन का प्रचार** करने लगे, (5) और **फिलिप्पुस** सामरिया नगर में जा कर लोगों में **मसीह का प्रचार** करने लगा। (6) जब लागों ने फिलिप्पुस की **बातें सुनी और उन चिन्हों को देखा** जिन्हें वह दिखा रहा था तो उन्हों ने एक चित्त हो कर उसकी बातों पर ध्यान दिया। (7) क्योंकि **बहुत लोगो में से अशुद्ध आत्माएं** बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल रहीं थीं, तथा **अनेक जो लकवे के मारे** और **लंगड़े** थे, **चंगे किए जा रहे थे**। (8) और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

- चिन्हों के द्वारा नए क्षेत्र में सुसमाचार के प्रचार की पुष्टि हुई।

पौलुस के अनुभव

प्रेरितों के काम 28:7–10 उस स्थान के आस–पास उस द्वीप के प्रधान पुबलियुस की भूमि थी। उसने हमारा स्वागत किया और तीन दिनों तक हमारा अतिथि सत्कार किया। (8) फिर ऐसा हुआ कि पुबलियुस का पिता **ज्वर और आंव** से पीड़ित पड़ा हुआ था। **पौलुस** उसे देखने भीतर गया और उसने **प्रार्थना कर के अपने हाथ उस पर रखे और उसे चंगा कर दिया।** (9) इस घटना के पश्चात द्वीप के शेष **रोगी** भी आ कर **चंगे** होने लगे। (10) और उन्होंने हमारा विभिन्न प्रकार से आदर सत्कार किया। जब हम उस स्थान से जाने को थे तो उन्होंने हमारी आवश्यकता की सारी वस्तुएं जहाज़ पर लाद दीं।

- एक बार फिर, चिन्हों के द्वारा इन मनुष्यों तथा इनके सन्देश की पुष्टि हुई।

प्रेरितों के काम 19:11–13 और **पौलुस** के हाथों से परमेश्वर **अद्भुत सामर्थ्य** के काम दिखाता था, (12) यहां तक कि उसकी देह से स्पर्श किए हुए **रुमाल** और अंगाछे रोगियों पर डाल दिये जाते थे और उनकी **बीमारियां दूर हो जाती थीं, और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थी**।

फिलिप्पियों 2:25–27 इपफ्रूदीतुस ... निश्चय ही वह बीमार तो हो गया था यहां तक कि मरने पर था, परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की,

- एक बार फिर से, कुछ बीमारियां मृत्यु तक बनी रहती हैं।

2 तीमुथियुस 4:20 मैं त्रुफिमुस को मीलेतुस में बीमार छोड़ कर आया हूं।

- मुझे पूरा यकीन है कि पौलुस ने त्रुफिमुस के लिए एक बार से ज़्यादा प्रार्थना की होगी।

1 तीमुथियुस 5:23 अब से केवल जल ही न पी, परन्तु पेट और बराम्बार होने वाले रोग के कारण थोड़े दाखरस का भी उपयेग कर लिया कर।

- ऐसा प्रतीत होता है कि प्रार्थना करने पर भी तीमुथियुस की बीमारी बनी रही।

हर एक जन को अपनी बीमारियों और रोगों से चंगाई नहीं मिलती।

IV. विश्वास की परिभाषा

पवित्र शास्त्र में विश्वास को इस प्रकार से परिभाषित किया है :
विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का **निश्चय,** और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। इब्रानियों 11:1

एक अन्य अनुवाद इस प्रकार कहता है : ''विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का तत्त्व**,** और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

निश्चय या वास्तविक का युनानी शब्द है : हूपोस्टासिस (हूपो – नीचे ; स्टासिस – खड़ा होना, रहना, बने रहना)

थायर के युनानी शब्दकोष में – ऐसा कुछ जो अधीन हो, नींव, आधार।

- जिसका वास्तव में अस्तित्व हो; एक तत्त्व

- एक भौतिक गुण, स्वाभाविक, मन की स्थिरता, कायम रहना, हिम्मत, संकल्प, भरोसा, पूरा भरोसा, निश्चय।

युनानी शब्द में **क्रिया** का अभिप्राय है, यह केवल वस्तु या तत्व नहीं। विश्वास में यदि कर्म नहीं तो वह मृत है। (याकूब 2:17)

जे.एन. डारबी इस पद को इस प्रकार अनुवाद करते हैं :'' विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं को प्रमाणित करना है।''

तत्त्व : वो है जो ठोस है और जगह लेता है; पदार्थ। इसे छुआ और देखा जा सकता है। एक विशेष प्रकार का या संघटित पदार्थ।

वास्तविक : जिसमें तत्त्व हों या तत्त्व से सम्बन्ध रखता हो; पदार्थ। वास्तव में या असल ; काल्पनिक नहीं।

प्रमाणित करना: प्रमाण या सबूत के द्वारा समर्थन ; सत्यापित करना :
अ) भौतिक आकार देना ; साकार। ब) ठोस या मज़बूत बनाना

तत्त्व देना ; वास्तविक या यर्थाथ बनाना।

अतः विश्वास आशा की हुई वस्तुओं को तत्त्व देता है और उसे असल या वास्तविक बना देता है (भौतिक आकार दे कर)।

दूसरे शब्दों में : विश्वास आशा की हुई वस्तुओं को सजीव बना देता है।

रोमियों 4:17–22 परमेश्वर, जो मृतकों को जिलाता है और **जो वस्तुएं हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है मानो वे हैं।** (18) **उसने निराशा में भी आशा रख कर विश्वास किया,** इसलिए कि **उस वचन के अनुसार जो कहा गया था,** "तेरा वंश ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का पिता हो। (19) वह जो एक सौ वर्ष का था, उसने मृतक समान शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई दशा जानते हुए भी विश्वास में न र्निबल हुआ, (20) **फिर भी, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में वह अविश्वास के कारण विचलित नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर की महिमा करते हुए विश्वास में दृढ़ हुआ,** (21) और पूर्णतः आश्वस्त हो कर कि जो प्रतिज्ञा उसने की थी, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है।

2 कुरिन्थियों 4:18 "हमारी दृष्टि उन वस्तुओं पर नहीं जो दिखाई देती है, पर उन वस्तुओं पर है जो अदृश्य हैं, क्योंकि दिखाई देने वाली वस्तुएं तो अल्पकालिक है, परन्तु अदृश्य वस्तुएं **चिरस्थायी** हैं।"

विश्वास "आशा की हुई वस्तुओं" को वास्ताविकता में ले आता है और वे मुझे दिखाई दें, जिससे वो मेरे अनुभव में वास्तविकता बन जाए।

मुझको विश्वास, मसीह की बातें प्रमाणित करता है।

उदाहरण के लिए : रोमियो 6:6 "हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया।"

- विश्वास इस सत्य को मेरे अनुभव में वास्तविक बना देता है।
- **विश्वास कुछ रचता नहीं है। वह केवल उसे प्राप्त करता है** जिसे प्रभु ने मेरे लिए खरीदी या **दे दी** है।

- यदि वास्तव में ज़मीन ही नहीं है तो उसका भूमि अधिकार पत्र होना फर्जी है।

- यदि मैं विश्वास न भी करुं, फिर भी वह सत्य है। वह वास्तविकता है। परन्तु वह मेरे जीवन और अनुभव में वास्तविकता नहीं बनी।

यदि मैं एक बड़ी रकम को जीतता हूं और मेरा नाम टेलीविजन पर घोषित हो जाता है, यह सत्य है। क्योंकि यह सत्य है और जो कुछ मुझे करना है वह यह है कि जाऊं और उसे प्राप्त करुं। यदि फिर भी मैं उस पर विश्वास न करुं, तो फिर हालांकि यह सत्य है, यह मेरा अनुभव नहीं बनता।

यदि हम क्रूस के सत्य पर विश्वास न करें तौभी वह हमेशा के लिए सत्य रहेंगे, परन्तु हमारे लिए महत्वहीन रहेंगे। इसके लिए विश्वास की आवश्यकता नहीं कि यह बातें अपने आप में सच हो जाएं, परन्तु विश्वास इन बातों को 'प्रमाणित' करता है और इन्हें हमारे अनुभव में सच बना देते हैं।

यूहन्ना 17:17 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर – **तेरा वचन सत्य है**।"

भजन संहिता 103:2–5 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूल ; (3) **जो तेरे सब अधर्मों को क्षमा करता** और **तेरे सब रोगों को चंगा करता** ; (4) जो तेरे प्राण को गड्ढे में से उबारता और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट पहिनाता; (5) जो तेरी लालसाओं को **भली वस्तुओं** से तृप्त करता है, जिससे तेरी **जवानी** उकाब के समान फिर से **नई हो जाती है**।

मत्ती 8:16–17 और जब संध्या हुई, तो वह बहुत से दुष्टात्मा – ग्रस्त लोगों को उसके पास लाए ; और उसने वचन मात्र से ही उन **दुष्टात्माओं को निकाला** और उन **सब को चंगा किया** जो बीमार थे, (17) जिससे कि जो वचन यशायाह नबी द्वारा कहा गया था वह पूरा हो : "**उसने स्वयं हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारे रोगों को उठा लिया**।"

1 पतरस 2:24 उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर **हमारे पापों को उठा लिया,** जिससे हम पापों के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि **उसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो**।

विश्वास, आपका परमेश्वर के वचन के प्रति सम्पूर्ण समर्पण है।
उत्पत्ति 12:1 तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, अपने कुटुम्बियों तथा अपने पिता के घर से उस देश को चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊंगा। (4) **यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चल पड़ा**

वचन और **प्रतिज्ञाएं,** अनन्त और बहुतायत के जीवन के लिए आपका अधिकार पत्र है। जिस प्रकार अधिकार पत्र आपके स्वामित्व का प्रमाण है, उसी प्रकार **कार्यों के साथ आपका विश्वास,** आपके अधिकार पत्र की आशिषों को आपका अपना बना देता है।

इब्राहीम के पास परमेश्वर यहोवा द्वारा दी उसके पुत्र इसहाक से सम्बन्धित प्रतिज्ञा थी।

उत्पत्ति 15:4–6 परन्तु जो तुझ से उत्पन्न होगा वही तेरा उत्तराधिकारी होगा। (5) और बाहर ले जा कर उसने उससे कहा, "अब आकाश की ओर देख और यदि गिन सके तो तारों को गिन।" फिर उसने कहा, "तेरा वंश भी ऐसा ही होगा।"(6) तब उसने यहोवा पर विश्वास किया और इसे यहोवा ने उसके लिए धार्मिकता गिना। (17:1–7 भी देखें)

इब्राहीम के विश्वास की परख :

उत्पत्ति 22:2 उसने कहा, "अपने पुत्र, हां, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम करता है, साथ ले कर मोरिय्याह देश को जा ; वहां एक पहाड़ पर, जिसे मैं तुझे बताऊंगा, उसे होम बलि कर के चढ़ाना।"

उत्पत्ति 22:8 इब्राहीम ने कहा, " बेटा, होम बलि के लिए मेमने का **प्रबन्ध परमेश्वर** स्वयं ही **करेगा**।" अतः वे दोनो साथ– साथ आगे बढ़े।

इब्रानियों 11:19 उसने यह मान लिया कि **परमेश्वर, लोगों को मरे हुओ में से जीवित करने मे समर्थ है** – जहां से उसने, दृष्टान्त के रुप में, उसे पा भी लिया।

विश्वास यह है कि जिस समय हमारी बुद्धि और सब कुछ जो हमारे अन्दर है असम्भावनाओं को देखें, उस समय हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना और उसकी आज्ञा मानना है ताकि हम वही करें और उसी को सामने लाएं जो सही है।

विश्वास यह जानना है कि : जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं। रोमियों 8:28

इब्रानियों 11:6 विश्वास के बिना उसे प्रसन्न करना असम्भव है, क्योंकि जो कोई परमेश्वर के पास आता है, उसके लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि (1) वह है, और (2) अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

1. "वह है " जिसे उसने कहा, वह था और जिसने उसे जो लिखा था पूरा किया।

2. परमेश्वर उस विश्वास को प्रतिफल देता है जो उसे ढूंढता है क्योंकि वह इससे प्रसन्न होता है।

विश्वास तर्क–वितर्क करने से परे है।।

- यह बिना 'क्यों' समझे, उसे मान लेता है। (उत्पत्ति 22:2)
- यह बन्दीगृह में भी गीत गाता है। (प्रेरितों के काम 16:25)
- यह क्लेशों में भी आनन्दित होता है (रोमियो 5:3)
- यह दुख भोगना चुनता है।(इब्रानियों 11:25)

परमेश्वर ने हर एक को विश्वास के परिमाण बांटा है | रोमियों 12:3–4

और इसी परिमाण के द्वारा हमारा विश्वास बढ़ और उन्नति कर सकता है, जब हम **सुनना** सीखते हैं : अतः विश्वास **सुनने** से, और सुनना मसीह के **वचन** के द्वारा होता है। रोमियों 10:17

- वे काम जो यीशु ने किए, पिता को करते हुए देखने से आए।

यूहन्ना 5:19–20 '' मैं तुम से सच सच कहता हूं कि **पुत्र स्वयं कुछ नहीं कर सकता,** केवल वह पिता को करते देखता है, क्योंकि जो कुछ पिता करता है, उन्हीं कामों को **पुत्र भी ठीक उसी रीति से करता है** |''

- प्रार्थना करें और अपनी आंखों को प्रशिक्षित करें ताकि वह जो कर रहा है उसे देख सकें।

यूहन्ना 5:30 '' मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ नहीं कर सकता | **जैसा सुनता हूं,** वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि **मैं अपनी नहीं,** वरन् **अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं** |

- गहराई में भीतर जो शान्त, धीमी आवाज़ है उसे लगातार सुनना सीखें।
- अपनी कार्यसूची को एक किनारे रख दें | हर एक परिस्थिति में उसकी इच्छा को जानें।

यूहन्ना 8:28–29 **मैं अपने आप से कुछ नहीं करता,** परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया है मैं यह बातें कहता हूं।

- सीखने वाले, शिष्य बनें | वचन पढ़ें, आत्मा में प्रार्थना करें।

यूहन्ना 8:38 मैं वे ही बातें **कहता** हूं जिन्हें अपने पिता के यहां **देखा** है

- बोलने से पहिले देखना आता है | हम जब तक देखें न अपना मुंह बन्द रखें।

यूहन्ना 14:10 क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता हूं और पिता मुझ में है? जो **वचन मैं तुम से कहता हूं वह अपनी ओर से नहीं कहत**ा, परन्तु पिता **जो मुझ में रहता है** वही अपने कार्य करता है।

- यूहन्ना 15:4–5 तुम **मुझ में बने रहो** और **मैं तुम में**। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही **तुम भी यदि मुझ में बने न रहो** तो नहीं फल सकते | मैं दाखलता हूं, तुम डाली हो | **जो मुझ में बना रहता है** और मैं उसमें, वह **बहुत फल फलता** है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

यूहन्ना 14:12–14 मैं तुम से सच सच कहता हूं कि **जो मुझ पर विश्वास** करता है, **वे कार्य जो मैं करता हूं , वह भी करेगा,** और इनसे भी महान कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। (13) और **जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे,** वही करुंगा कि पुत्र में **पिता की महिमा** हो | (14) यदि तुम मुझ से मेरे नाम में कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करुंगा।

नीचे बार्नस के हिन्दी में अनुवादित नोट्स हैं। (Copyright (c) 1997 by Biblesoft)

यूहन्ना 14:13 **जो कुछ तुम ... मांगोगे** – यह प्रतिज्ञा विशेष तौर से प्रेरितों को दिया जिससे वे सुसमाचार के कार्य को फैलायें ; यह तथापि सभी विश्वासियों के लिए भी सत्य है, यदि वे विश्वास में जो कुछ भी मांगे, और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो।

याकूब 1:6 परन्तु उसे विश्वास से मांगना है बिना कुछ सन्देह किये,

1 यहून्ना 5:14 हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है ; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है।

मेरे नाम से – यह कहने के समानन्तर है कि मेरे खाते से, या मेरे कारण। यदि कोई मनुष्य जिसके पास बैंक में पैसा हो, हमें पैसा निकालने का अधिकार दे। हम ऐसा उसके नाम से करेंगे। यदि पुत्र हमें अधिकार दे कि हम उसके पिता से सहायता मांगे, क्योंकि हम उसके मित्र हैं, तो हम ऐसा पुत्र के नाम से करेंगे, तथा उसके माता-पिता का अपने पुत्र के लिए जो मान है उसे ध्यान में रख कर हम पर कृपा की जाएगी, और उसके द्वारा सारे मित्रों पर। अतः हमे अनुमति है कि हम परमेश्वर से उसके पुत्र यीश मसीह के नाम से मांगे, क्योंकि उसमें वह अति प्रसन्न है (मत्ती 3:17), और क्योंकि हम उसके पुत्र के मित्र हैं, वह हमारी विनतियों का उत्तर देता है। हालांकि हम अयोग्य हैं, फिर भी वह अपने पुत्र के कारण हम से प्रेम करता है, और हम में अपना प्रतिरुप देखता है। परमेश्वर के निकट उसके पुत्र के नाम से आने से बढ़कर और कोई सौभाग्य नहीं हैं ; जो उसके नाम से नहीं आते उन्हें उद्धार की कोई भी आशिषें नहीं दी जाएंगी।

वही मैं करुंगा – ऊंचा किये जाने पर, उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार होगा (मत्ती 28:18), और इसी कारण वह उनकी सारी इच्छाओं को पूरी कर सकता है।

ऊपर बार्नस के हिन्दी में अनुवादित नोट्स हैं। (Copyright (c) 1997 by Biblesoft)

V. विश्वास का महत्व

विश्वास की ढाल, मसीही अस्त्र-शस्त्र का महत्वपूर्ण भाग है। आपको "परमेश्वर के सारे अस्त्र-शस्त्र धारण" कर लेना हैं (इफिसियों 6:16) क्योंकि मसीही जीवन एक युद्ध है, आत्मिक युद्ध। जैसे पौलुस मसीही अस्त्र-शस्त्रों के विभिन्न भागों का नाम लेता है, और जब वह ढाल पर आता है तो उसके महत्व पर ज़ोर देते हुए कहता है, "इनके अतिरिक्त, विश्वास की ढाल लिए रहो" क्योंकि विश्वास की ढाल के साथ, आपको कुछ हानि नहीं पहुंचती ; आप उसमें जयवन्त से भी बढ़कर हैं (रोमियों 8:37)।

विश्वास का महत्व देखा जा सकता है :

1. आप विश्वास के बिना बचाए नहीं जा सकते। यूहन्ना 3:36
2. आप विजयी जीवन नहीं जी सकते। 1 यूहन्ना 5:4
3. आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इब्रानियों 11:6
4. आप प्रार्थना नहीं कर सकते। याकूब 1:6
5. आपका परमेश्वर के साथ मेल नहीं हो सकता। रोमियों 5:1
6. आप को आनन्द प्राप्त नहीं होगा। 1 पतरस 1:8
7. आप विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं। गलातियों 2:16
8. आप विश्वास के द्वारा जीवित रहते हैं। गलातियों 2:20
9. आप विश्वास से धर्मी बनाए जाते हैं। रोमियों 10:1–4
10. विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसता है। इफिसियों 3:17
11. विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा पाई जाती है। गलातियों 3:2
12. जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है। रोमियों 14:23

विश्वास महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे परमेश्वर को आदर मिलता है, और परमेश्वर विश्वास का आदर करते हैं।

VI. लाज़र की बीमारी से सीख

यूहन्ना 11:3–5 अतः उसकी बहनों ने उसे कहला भेजा, '' हे प्रभु , देख, **जिससे तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।**''

- जैसा सच्चे विश्वासी को करना चाहिए और करते हैं, उन्हों ने यीशु को बुलाया।
- उनका अनुरोध करना हमारे पुकारने के लिए भी अच्छा तरीका है क्योंकि यीशु हम सब से प्रेम करता है।

(4) यह सुन कर यीशु ने कहा, ''यह बीमारी मृत्यु की नहीं ; परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।''

- ''यह बीमारी मृत्यु की नहीं'' इस बात की तरफ संकेत करती है कि कुछ बीमारियां मृत्यु की हैं। इब्रानियों 9:27 और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना ... नियुक्त है।

- हमारा जीना और मरना, और जो कुछ हम करते हैं, हमारे पिता और प्रभु यीशु मसीह की महिमा के लिए हों।

रोमियों 14:8 यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं ; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं ; अतः हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं।

फिलिप्पियों 1:21 क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। (23) क्योंकि मैं दोनो के बीच अधर में लटका हूं ; जी तो चाहता है कि कूच कर के मसीह के पास जा रहूं , क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है।

यूहन्ना 11:6 जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहां दो दिन और ठहर गया।

- अकसर हमारी पुकारों और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर तुरन्त नहीं मिलता। परन्तु प्रभु ने सुन लिया और वह जानता है, और उसके पास विलम्ब का उचित कारण है।

यूहन्ना 11:21–24 मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु , यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। (22) "और अब भी मैं जानती हूं कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।"

- मार्था का विश्वास मज़बूत था।

(23) यीशु ने उससे कहा, " तेरा भाई फिर जी उठेगा।" (24) मार्था ने उससे कहा, " मैं जानती हूं कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।"

- मार्था का विश्वास मज़बूत था, उसका धर्मविज्ञान ठीक था और फिर भी इस समय तक अपने भाई की चंगाई के लिए उसकी प्रार्थनाओं का काई लाभ नहीं हुआ।

- मार्था ने इस महान सत्य में मूल–भूत विश्वास की घोषणा की, परन्तु आज यह महान कार्य करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

- उसका मज़बुत विश्वास सीमित था। वह विश्वास करती थी कि यीशु के पास उसके भाई को बीमारी के बिस्तर से खड़ा करने की सामर्थ है, परन्तु मृत्यु से नहीं।

- सीमित विश्वास, परिस्थितियों से नियंत्रित और असफलता के भय से प्रेरित होता है।

(25) यीशु ने उस से कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं ; **जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा,**

- यीशु को जीवन और मृत्यु पर सारी शक्ति मिली है। (इब्रनियों 2:14) "मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं ; (18) मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं। प्रकाशितवाक्य 1:17–19।।

- अनन्त जीवन के लिए यीशु में विश्वास होना पर्याप्त है और आवश्यक है – चाहे वह मर भी जाए।

(26) और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वे अनन्त काल तक न मरेगा।

- यह अद्‌भुत और आश्चर्यजनक सच है। शरीर काम करना बन्द कर सकता है, परन्तु व्यक्ति जीवित रहता है।

क्या तू इस पर विश्वास करती है? (27) उसने उससे कहा, ''हां प्रभु , मैं विश्वास करती हूं कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आने वाला था, वह तू ही है ।''

- मार्था ने प्रशन का उत्तर नहीं दिया या उसे टाल गई परन्तु उसने अपने विश्वास कथन में कथित अपना मूल विश्वास कह दिया ।

- केवल विश्वास कथन में विश्वास करना काफी नहीं है ; विश्वास को विश्वासकथन के पार, जीवते और सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु मसीह के पास जाना चाहिए ।

(39) यीशु ने कहा, ''पत्थर हटाओं ।'' उस मरे हुए की बहन मार्था उस से कहने लगी, ''हे प्रभु , उसमें से अब तो दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं ।''

- शायद ''पत्थर'' का अर्थ हमारा बन्द दिमाग, हमारा सन्देह भी हो सकता हैं जो विश्वास के मार्ग में आड़े आता हैं ।

(40) यीशु ने उस से कहा, '' क्या मैंने तुझ से नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा देखेगी ।''

- हम अकसर सुनते हैं कि ''देखने से विश्वास होता है'' परन्तु विश्वास के जन के लिए ऐसा नहीं है । आप विश्वास करेंगे और देखेंगे ।
- विश्वास देखने से पहले आता है ।

(41) तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया । यीशु ने आंखें उठा कर कहा, ''हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तूने मेरी सुन ली है । (42) मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उसके कारण मैं ने यह कहा, जिससे कि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है ।''

- 1 यूहन्ना 5:14 हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है ; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है । (15) यदि हम जानते हैं कि जो कुछ हम उससे मांगते हैं वह हमारी सुनता है तो यह भी जानते हैं कि जो कुछ हमने उस से मांगा वह हमें प्राप्त हो चुका है ।

(43) यह कह कर उसने बड़े शब्द से पुकारा, ''हे लाज़र, निकल आ!'' (44) जो मर गया था वह कफ़न से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था । यीशु ने उन से कहा, '' उसे खोल दो और जाने दो ।''

- विश्वास का कहा गया वचन, परमेश्वर की इच्छा को पृथ्वी पर सजीव कर देता या प्रमाणित करता है । परमेश्वर ... जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें है ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं । रोमियों 4:17–18

- केवल सीमित और बुनयादी विश्वास से सन्तुष्ट न रहें, जब कि आप असीमित विश्वास पा सकते हैं जो परमेश्वर को भाता है और उसकी महिमा को प्रकट करता है ।

VII. विश्वास के वीर

इब्रानियों 11 – आप को यह अध्याय बहुधा पढ़ना चाहिए और इस पर मनन् करना चाहिए जिससे प्रभु में आप का विश्वास दृढ़ हो जाए। यहां पर हमें इस्राएल और कलीसिया के इतिहास की झलक देखने को मिलती है, जहां पर सन्तों के महान कार्यों को विश्वास द्वारा लिखा गया है।

पद 4	वे हाबिल के समान विश्वास से आराधना करते थे।
पद 5	वे हनोक के समान विश्वास से चलते थे।
पद 7	वे नूह के समान विश्वास से कार्य करते थे।
पद 8–19	वे इब्राहीम के समान विश्वास से रहते थे।
पद 20–22	विश्वास के द्वारा उन्होंने इसहाक और याकूब के समान भविष्य में होने वाली बातों के विषय में आशिषें दी।
पद 23–28	वे मूसा के समान विश्वास के द्वारा संचालित हुए।
पद 29	उन्होंने इस्राएल के समान विश्वास से समुद्र को पार किया।
पद 30	उन्होंने यहोशु के समान विश्वास के द्वारा युद्ध किया।
पद 31	दूसरी जातियों के लागों ने विश्वास के द्वारा उद्धार पाया – राहाब।
पद 32–33	उन्होंने गिदोन के समान विश्वास से राज्यों पर जय पाई।
पद 33	उन्होंने दानिय्येल के समान विश्वास के द्वारा सिंहों के मुंह बन्द किए।
पद 34	वे तीन इब्रानी पुरुषों के समान विश्वास से आग की ज्वाला में चले।
पद 35–38	उन्होंने पौलुस के समान विश्वास से दुख सहा। स्तिफनुस के समान वे विश्वास के कारण मर गए।

इब्रानियों 11:38–40 और जंगलों, और पहाड़ों, और गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे। संसार उनके योग्य न था। **विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली।** क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिए पहिले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुंचें।

केवल सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा ही आप आंधियों के मध्य में भी शान्ति पा सकते हैं, तथा उन सारे दुष्ट शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं जो आप को नष्ट कर देना चाहती हैं।

इब्रानियों 12:1–3 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है,

- प्राचीन सन्तों का विश्वास हमें प्रेरित और प्रोत्साहित करता है , जब वो ऊपर से हम पर निगाह रखते हैं। अतः

तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके,

- पाप, असत्य, और सन्देहों के भार, सब शत्रु के लिए द्वार को खोलते हैं और उनको वैध अधिकार देते हैं कि हमें परेशान करें। उन्हें उतार फेंकें, दूर कर दें।

वह **दौड़** जिसमें हमें **दौड़ना** है **धीरज** से **दौड़ें,**

- जीवन के पड़ाव और समय लम्बे और कठिन हो सकते हैं परन्तु विश्वास कभी हार नहीं मानता।

(2) और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले **यीशु की ओर ताकते रहें,**

- यीशु आपके विश्वास को सिद्ध **करता है और करेगा**।

- पहाड़, समस्याओं की तरफ न देखें परन्तु आज्ञाकारी के समान यीशु की ओर देखें। एक प्रशिक्षित कुत्ता कभी भी अपनी आंखें अपने मालिक की ओर से नहीं हटाता ताकि वह तुरन्त अपने मालिक के आदेश को माने।

जिसने उस **आनन्द** के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके **क्रूस का दुख सहा,** और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा।

- आने वाली आशिषों और प्रतिफल के आनन्द के लिए, परिक्षाओं को सह लें, चाहे आपके विश्वास का मज़ाक बनाया जाए और उसका तिरस्कार किया जाए, क्योंकि वह दिन आएगा जब आप उसके साथ विराजमान होगें।

(3) इसलिए **उस पर ध्यान** करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध **सह लिया** कि **तुम निराश हो कर साहस न छोड़ दो**।

- जब आप यह कहने को तैयार हों ''अब बहुत हो चुका'', क्रूस पर ध्यान दें ...

VIII. विश्वास की परीक्षा

अपनी परीक्षा के समय प्रभु ने पतरस से कहा, वह हम सब से कह रहा है :

लूका 22:32 परन्तु मैंने तेरे लिए विनती की कि **तेरा विश्वास जाता न रहे** ;

- पतरस ने सोचा कि उसका विश्वास दृढ़ और अटल है। लूका 22:33 पतरस ने उससे कहा, ''हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन मरने को भी तैयार हूं।''

- परन्तु जब **परीक्षा** का समय आया तो पतरस ने प्रभु का तीन बार इनकार किया , जैसा यीशु ने कहा था। लूका 22:34 यीशु ने कहा, ''हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूं कि आज मुर्ग बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार न कर लेगा कि तू मुझे नहीं जानता।''

- यह केवल **परीक्षा** के बाद ही यह हो पाया कि पतरस के पास प्रभु यीशु के कारण जेल और मृत्यु तक जाने का **विश्वास** था।

यह जानते हुए कि उसकी सेवकाई का अन्त आ चुका हैं, पौलुस अपने 30 से अधिक वर्षों का सारांश करता है :

2 तीमुथियुस 4:6–7 क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उण्डेला जाता हूं , और मेरा कूच का समय आ पहुंचा है। (7) **मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं ,** मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, **मैंने विश्वास की रखवाली की है** ।

- ''अच्छी कुश्ती लड़ना'' और ''विश्वास की रखवाली करना'' दोनो एक साथ हैं।

प्रेरित पौलुस की जवान शिष्य को चेतावनी :

1 तीमुथियुस 6:12 **विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़** ; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिए तू बुलाया गया और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

- हमारी आत्मा का शत्रु हमारे **विश्वास** को हलका और **कमज़ोर** करने के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा। वह हमारे दिमाग में फुस–फुसाएगा और सन्देह तथा अविश्वास उत्पन्न करेगा। यह निश्चय ही एक **लड़ाई** है ताकि हम अपने विश्वास को बनाए रख सकें तथा उसे बढ़ाएं। हमें पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई चेतावनी को अपने ऊपर व्यक्तिगत तौर से लेनी चाहिए, और विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़नी है।

पौलुस ने अपने ''विश्वास की कुश्ती'' में अनेकों परिक्षाओं को सहा।

- पौलुस ने प्रभु को बड़े–बड़े और महान काम करते देखा : नगर हिल गए, मनुष्य मरने के बाद जिलाये गए, बहुत से अन्धकार से बचााए गए और नई कलीसियाएं स्थापित हुई।

- परन्तु पौलुस ने कुछ भयंकर समय भी देखा :
  - उस पर पत्थराव किया और मरने के लिए छोड़ दिया, प्रेरितों के काम 14:19–20। प्रभु कहां था?
  - व्यक्तिगत लोगों द्वारा सताव : 1 तीमु 1:18–19 ; 2 तीमु 4:14
  - उसके विश्वास की कुछ परिक्षाओं की सूची : 2 कुरिन्थियों 11:23–33

<– यह विश्वास की कुश्ती है –>

अय्यूब के विश्वास की महान परीक्षा

अय्यूब 1:6–12 एक दिन यहोवा परमेश्वर के पुत्र उसके सामने उपस्थित हुए, और उनके बीच शैतान भी आया ... (8) यहोवा ने शैतान से पूछा, '' क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है? क्योंकि उसके तुल्य **खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला** मनुष्य और कोई नहीं है।'' (9) शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, ''क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? (10) क्या तू ने **उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारों ओर बाड़ा** नहीं बांधा? **तूने तो उसके काम पर आशिष दी है, और उसकी सम्पत्ति** देश भर में **फैल** गई है।

- भजन संहिता 1:1–3

(11) ''परन्तु अब अपना हाथ बढ़ा कर जो कुछ उसका है, उसे छू ; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।''

- बिना परमेश्वर की अनुमति के शैतान या कोई दुष्टात्मा अय्यूब को छू नहीं सकता था।
- 1 यूहन्ना 5:18 हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता ; परन्तु वह जो परमेस्वर से उत्पन्न हुआ है, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

(12) यहोवा ने शैतान से कहा, ''सुन, **जो कुछ उसका है,** वे सब तेरे हाथ में है ; केवल **उसके शरीर पर हाथ न लगाना।**'' तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।

- शैतान वही कर सकता है जिसकी अनुमति परमेश्वर अपने किसी बच्चे के लिए देता है।
- **परमेश्वर ने अय्यूब के विश्वास की महान परीक्षा करने की अनुमति दी।**

अय्यूब 1:13–22
एक दिन अय्यूब के बेटे – बेटियां बड़े भाई के घर में खा रहे और दाखमधु पी रहे थे ;

- अय्यूब ने अपने सारे नौकरों और पशुओं को खो दिया। पद 14–17
- अय्यूब के बच्चे और उनके मित्र मर गए। पद 18–19
  - यह स्पष्ट नहीं है, परन्तु मैं समझता हूं कि अय्यूब की सन्तानों पर शैतान को आक्रमण करने का एक मात्र तरीका यह हो सकता है कि यदि वे पाप के द्वारा शत्रु को वैध अधिकार दें। यह अच्छा निष्कर्ष है क्योंकि : अय्यूब 1:5 ''अय्यूब उन्हें बुलवा कर पवित्र करता, और बड़े भोर को उठा कर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था ; क्योंकि अय्यूब सोचता था, 'कदाचित मेरे लड़कों ने पाप करके परमेश्वर को छोड़ दिया हो।' इसी रीति अय्यूब सदैव किया करता था।

इन सारी दुःखद समाचार सुनने के पश्चात : पद 20 – तब अय्यूब उठा, और बागा फाड़, सिर मुंड़ाकर भूमि पर गिरा और **दण्डवत** करके कहा, (21) ''मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊंगा ; **यहोवा ने दिया** और **यहोवा ही ने लिया;** यहोवा का नाम धन्य है।'' (22) **इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।**

- अय्यूब ने अपने विश्वास की परीक्षा आदर्श बन कर उत्तीर्ण की, जिससे हम सब प्रोत्साहित हो सकें।
- **परन्तु , परीक्षा अभी समाप्त नहीं हुई थी :**

अय्यूब 2:2–10 यहोवा ने शैतान से पूछा, ... ''क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला मनुष्य और कोई नहीं है? यद्यपि तूने मुझे बिना कारण उसका सत्यनाश करने को उभारा, **तौभी वह अब तक अपनी खराई पर बना है।**'' (4) शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, '' खाल के बादले खाल! परन्तु प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है। (5) इसलिए केवल अपना हाथ बढ़ा कर उसकी हड्डियां और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।'' (6) यहोवा ने शैतान से कहा, ''सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।''

(7) तब शैतान यहोवा के सामने से निकला और अय्यूब को पांव के तले से ले **कर** सिर की चोटी तक बड़े–बड़े **फोड़ों से पीड़ित किया**।

- एक बार फिर यह दिखाता है कि कुछ कष्ट शत्रु की ओर से आते हैं चाहे उन्हें हम अनुमति दें या परमेश्वर।

(9) तब उसकी स्त्री उस से कहने लगी, ''क्या तू अब भी अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।'' (10) उसने उससे कहा, ''तू एक मूढ़ स्त्री की सी बातें करती है, क्या हम **जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुख न लें**?'' इन सब बातों में भी **अय्यूब ने अपने मुंह से कोई पाप नहीं किया।**

अकसर पूछे जाने वाला प्रशन, ''क्यों अच्छे लोगों के साथ बुरा होता है?'' अय्यूब निश्चय ही भला व्यक्ति था।

- **क्यों,** हम हमेशा जान और समझ नहीं सकते।

- हम हमेशा जान और समझ नहीं सकते कि **कैसे** यह समाप्त होगा।

- परन्तु हम यह जानते हैं कि **कौन** सब बातों के नियंत्रण में है। और यह कि **कौन** हमारा पिता है। और **कौन** हम से ऐसा प्रेम करता है कि जब हम पापी ही थे मसीह हमारे लिए मरा। (रोमियों 5:8)

इब्रानियों 11:13 यह सब **विश्वास ही की दशा में मरे** ; और **उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं नहीं पाई,** (यह प्रभु की इच्छा नहीं थी। हो सकता है कि उनमें से कुछ लोगों में जिन्हें चंगाई नहीं मिली, प्रभु की महान योजना हो?) और उन्हें दूर से देख कर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम **पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं**। (फिर भी उनका विश्वास महान था) (14) जो ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रकट करते हैं कि स्वदेश की खोज में हैं। (16) पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं ; इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।

जिस प्रकार पौलुस ने कहा है : क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना तो मसीह, और **मरना लाभ** है। परन्तु यदि सदेह जीवित रहूं तो इसका अर्थ मेरे लिए फलदायी परिश्रम है ; परन्तु मैं किस बात को चुनूं , **यह नहीं जानता**। मैं इन दोनो के बीच असमञ्जस में पड़ा हूं। मेरी लालसा तो यह है कि **कूच करके मसीह के पास जा रहूं**, क्योंकि यह अति उत्तम है। फिलिप्पियों 1:21 –23

शायद ऐसे : तब शद्रक, मेशक और अबेद–नागो ने राजा से कहा, "हे नबुकदनेस्सर, हमें इस सम्बन्ध में तुझे उत्तर देने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती। यदि ऐसा हुआ भी, तो हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं, **हमें उस धधकती हुई आग की भट्टी से बचा सकता है**, वरन् हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है। और **यदि वह ऐसा न भी करे** फिर भी हे राजा, तुझे यह मालुम हो कि हम न तो तेरे देवताओं की ओर न तेरी स्थापित की हुई सोने की मूर्त्ति को दण्डवत करेंगे।" दानिय्येल 3:16–18

1 पतरस 4:12–13 हे प्रियों, यह दुख–रुपी अग्नि–परीक्षा जो तुम्हारे मध्य इसलिए आई कि तुम्हारी परख हो – इसे यह समझ कर **अचम्भा न करना** कि कोई अनोखी घटना तुम पर घट रही है। (13) परन्तु जैसे जैसे तुम मसीह के दुखों में सहभागी होते रहे हो, **आनन्दित रहो,** जिससे कि उसकी महिमा के प्रकट होते समय भी **तुम आनन्द से उल्लासित हो जाओ**।

याकूब 1:12 **धन्य है वह मनुष्य जो परीक्षा में स्थिर रहता है,** क्योंकि खरा निकल कर वह **जीवन के उस मुकुट को प्राप्त करेगा** जिसे प्रभु ने अपने प्रेम रखने वालों को देने की प्रतिज्ञा की है।

हमारे प्रभु यीशु ने भी अपने विश्वास की महान परीक्षा का दुख उठाया।

लूका 22:41–44 वह उनसे अलग लगभग पत्थर फेंकने की दूरी तक गया और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा, (42) "हे पिता, **यदि तू चाहे तो इस प्याले को मुझ से हटा ले ; फिर भी मेरी इच्छा नहीं , पर तेरी इच्छा पूरी हो।**" (43) तब स्वर्ग से एक दूत उसे दिखाई दिया जो उसे सामर्थ देता था। (44) यीशु **व्याकुल हो कर आग्रह पूर्वक प्रार्थना कर रहा था, और उसका पसीना रक्त की बून्द के समान** भूमि पर गिर रहा था।

लूका 23:33 जब वे उस स्थान पर जो खोपड़ी कहलाता है पहुंचे तो वहां पर उन्होंने उसे और उसके साथ दो अपराधियों को भी **क्रूस पर चढ़ाया,** एक को दाहिने और दूसरे को बाईं ओर।

इब्रानियों 12:3 इसलिए **उस पर ध्यान करो,** जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध सह लिया कि तुम निराश हो कर साहस न छोड़ दो।

इफिसियों 6:10–11 अतः प्रभु और उसके सामर्थ की शक्ति में बलवान बनो। (11) परमेश्वर के सम्पूर्ण अस्त्र–शस्त्र धारण करो जिससे तुम शैतान की यक्तियों का **दृढ़ता पूर्वक** सामना कर सको। (12) हमारा संघर्ष तो मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानो, अधिकारियों, अंधकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्ट की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।

(13) इसलिए परमेश्वर के समस्त अस्त्र–शस्त्र धारण करो, जिससे तुम बुरे दिन का **सामना** कर सको और सब कुछ पूरा कर के स्थिर रहा सको। (14) अतः सत्य से अपनी कमर कस कर और **धार्मिकता** की झिलम पहिन कर, तथा पैरों में **मेल के सुसमाचार** की तैयारी के जूते पहिन कर **स्थिर रहो**। (16) इनके अतिरिक्त, **विश्वास की ढाल** लिए रहो जिससे तुम उस दुष्ट के समस्त अग्नि–बाणों को बुझा सको। (17) और उद्धार का टोप तथा **आत्मा की तलवार**, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

1 पतरस 1:4–9 तुम्हारी रक्षा परमेश्वर के सामर्थ के द्वारा **विश्वास से** उस उद्धार के लिए की जाती है जो अन्तिम समय में प्रकट होने पर है। (6) इससे तुम **अति आनन्दित** होते हो, भले ही तुम्हे अभी कुछ समय के लिए **विभिन्न परीक्षाओं के द्वारा दुख** उठाना पड़ा हो (7) कि तुम्हारा विश्वास – जो आग में ताये हुए नश्वर सोने से भी अधिक बहुमूल्य है – परखा जा कर यीशु मसीह के प्रकट होने पर **प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे**। (8) तुमने तो उसे नहीं देखा, तौभी तुम उस से प्रेम करते हो। और यद्यपि तुम उसे अभी भी नहीं देखते, फिर भी उस पर विश्वास करते हो और ऐसे आनन्द से आनन्दित होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से परिपूर्ण है, (9) और **अपने विश्वास** के प्रतिफल – स्वरुप अपनी आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

हमारी 'दौड़', छोटी दौड़ नहीं परन्तु मैराथन के तरह लम्बी दौड़ हैः

इब्रानियों 12:1–3 इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है **धीरज से दौड़ें,** (2) और **विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु** की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा। (3) इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना विरोध **सह** लिया कि **तुम निराश हो कर साहस न छोड़ दो**।

आभार : Master Outlines से लिए गए भाग तथा Porter Barrington द्वारा लिखित नोट्स ।